ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 360-363

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

भवानी प्रसाद मिश्र का आधुनिकता और परम्परा विषयक दृष्टिकोण

1. डॉ0 सुमित मोहन
2. कर्ण सिंह यादव

Email :aaryvart@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***कवि ने इतनी सफाई से दोनों विचारों को साथ लेकर दोनों के ही गलत पहलुओं पर बड़े ही सुन्दर तरीके से कुठाराघात किया है। उनकी रचनाओं को पढ़ने के पश्चात् पाठक मजबूर हो जाता है कि वह आधुनिकता और परम्परा को ठोक–बजाकर देखे और इसके बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि क्या सही है और क्या गलत। किन्हीं दो विपरीत विचारों को एक साथ इतनी सुन्दरता के साथ लेकर चलने वाले कवियों में भवानी भाई का नाम अवष्य ही लिया जा सकता है। कही पर मिश्र जी ने आधुनिकता के निकष पर परम्परा को परखा है तो कहीं परम्परा की कसौटी पर आधुनिकता को कस कर देखा है। यहाँ पर कवि उसी विचारधारा को सिद्ध करता दिख रहा है जिसमें हम पाते हैं कि परम्परा आधुनिकता की जननी है। जब परम्परा रूढ़ि बन जाती है तब आधुनिकता का जन्म होता है। वह उस रेखा को लेकर चला है जिससे परम्परा समाप्त होती है और आधुनिकता का जन्म होता है। यह वही सीमा रेखा है जो दोनों को अलग भी करती है और दूसरे शब्दों में दोनों को जोडती भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि भवानी भाई 'आधुनिकता और परम्परा' के कवि हैं। दोनों विचारों की झलक उनकी कविताओं में मिलती है जो कि उनकी रचनाओं को और भी मार्मिक बनाती है।***

कुंजीभूत शब्द–कुठाराघात, आधुनिकता और परम्परा, निष्कर्ष, विपरीत विचारों।

1. प्रोफेसर, 2. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

1. परम्परा विषयक दृष्टिकोण– भवानी भाई की दृष्टि में परम्परा हमारे आगे बढ़ने का सहारा है, जिसके अभाव में हम कभी आधुनिकता को ग्रहण नहीं कर सकते। हमारा देश परम्पराओं का देश है और परम्पराएँ हमारे जीवन में रची बसी हैं। भवानी भाई का मानना है कि हमारी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति का परम्परा से गहन सम्बन्ध है। वे परम्परा के प्रति रोमानी दृष्टिकोण रखते हुए ऐसे शिक्षण संस्थानों की कल्पना करते हैं जहाँ ''स्वच्छंद वातावरण हो, जहाँ शिक्षक और शिक्षित में कोई दुराव न हो, वे पृथ्वी और आकाश की भांति एक–दूसरे के समक्ष हों वे अपना सारा जीवन एक ही महत्वाकांक्षा को लेकर संस्कृति के सारे आनंदो का उपभोग करते हुए कार्य करें य हमारे प्राचीन तपोवन ऐसे ही स्थान थे। वहाँ आचार्य और ब्रहमचारी एक साथ समिधा और कुश इकट्ठा करते हुए 'तत्वमसि' का पाठ करते थे। इस प्रकार हमारे बौद्धिक स्थान केवल अध्यात्मिक केन्द्र ही नहीं, आर्थिक उन्नति का भी केन्द्र थे।''

भारतीय परम्परा में अनेक विशेषताएँ हैं। हमारी परम्परा मानव को मानव बनाती है। वह मानव को निष्छल प्रेम और सहानुभूति से भरा बनाती है। अन्य पाश्चात्य परम्पराओं की तरह भारतीय परम्परा मनुश्य को विकास के नाम पर कुंठाग्रस्त नहीं करती। भवानी भाई भारतीय परम्परा के वैशिष्ट्य का रेखांकन कुछ इस प्रकार करते हैं–

''मैं शुद्ध भारतीय ढंग का आदमी हूँ। अपनी मिट्टी, इतिहास, दर्शन, परम्परा, संस्कृति और सभ्यता को प्यार करता हूँ। सभी संस्कृतियों को देखने समझने के बाद यहाँ तक पहुँचा हूँ कि भारतीय संस्कृति मनुष्य बनाती है–अन्य संस्कृतियाँ मनुष्य नहीं बनातीं–मनुष्य के नाम पर कुछ और बनाना चाहती हैं। यंत्र मानव, युद्ध मानव, भौतिक मानव, आस्तित्ववादी मानव, पीड़ाओं – कुंठाओं से भरा मानव भारतीय संस्कृति न तो बनाती है न बनाने मे सक्षम है। ''

जहाँ हमारी भारतीय संस्कृति की बात आती है वहाँ भवानी भाई उसे ज्ञान, योग और कर्म तीनों के मिश्रण से बना हुआ बताते हैं। हमारी संस्कृति इन तीनों की गतिधारा से जन्मी संस्कृति है। वह एक पौराणिक प्रसंग को छेड़ते हुए हमारी परम्परा को भेदभाव मिटाकर सबको साथ लेकर चलने वाली परम्परा बताते हैं –

''कमल के फूल में पूरी भारतीय संस्कृति समायी हुई है। कमल, भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग तीनों की गति धारा से जन्मा पुष्प है। ..... ---- सूर्य, भगवान विष्णु की दाहिनी आँख है और कमल बिना सूर्य के खिले भी क्यों। उसका खिलना सूर्य के साथ ही खिलना है। इसीलिए पुराण कथाओं में राम जब अपनी दाहिनी आँख को निकालकर शक्ति को चढ़ाते हैं – तो वे अपने भीतर के सूर्य को ही अर्पित कर देते हैं जिसमें सब कुछ साफ हो जाता है–प्रकाशित हो जाता है। यह सोचने की बात है कि हमारा साहित्य कमल सरोवरों से पटा पड़ा है–ऐसे ही नहीं पटा पड़ा है– इसके भीतर गहरी बात छिपी है–जल जल में मिल रहा है–भेदभाव मिट रहा है।''

हमारा देश इतना शक्तिशाली है कि अनेक देशों ने इस पर शासन किया लेकिन कोई इसमें स्थायी रूप से रह न सका। हमारे क्रान्तिकारियों ने आन्दोलन छेड़कर फिरंगियों को भगा डाला। इस शक्ति के पीछे हमारी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

संस्कृति है जिसने अनुभवों से सीखा है कि हिंसा का एकमात्र उत्तर अहिंसा है। भवानीभाई भी हमारी संस्कृति और परम्परा के विशय में कुछ ऐसे ही विचार रखते हैं –

'' अन्तहीन–भाषाहीन यह देश इतना शक्तिशाली है मैंने यह मानों इसमें हुए आन्दोलनों से ही जाना। मेरी श्रद्धा इतिहास, संस्कृति में दृढ़ होती गई और गाँधी के साथ भारतीय संस्कृति को ही गाने लगा और आज भी गाता हूँ – 'कालजयी' उसी लम्बी विचार यात्रा–से जन्मी रचना है। आप देख सकते हैं कि मेरे एक मात्र प्रबंध रचना 'कालजयी' व्यक्ति की नहीं संस्कृति की गाथा है। ऐसी संस्कृति जिसने अनुभवों से सीखा है कि हिंसा का एकमात्र उत्तर अहिंसा है। भारतीय संस्कृति सन्तों की संस्कृति है–तानाशाहों की नहीं है।''

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार हमारी संस्कृति में प्राचीन काल से चला आ रहा है। हमारी सभ्यता और संस्कृति जिस प्रकार सागर सभी नदियों को अपने में समाहित कर लेता है उसी प्रकार समस्त विश्व की संस्कृतियों को अपने में समाहित कर लेती है। क्षमा, दया, मानवीयता हमारी परम्परा रहे हैं और आज भी हमारी संस्कृति मानवीयता की संस्कृति है न कि भौतिकता की। भवानी भाई भी इस विचार से सहमतहैं–

''भारतीय संस्कृति सबको समा लेने वाली संस्कृति है भटककर भटकाकर फेंक देने वाली संस्कृति नहीं है। आर्य–अनार्य इसमें समा गए–राम में शिव और शिव में राम समाए। और तो और शक, हूण, कुषाण, मंगोल, तुक्र सभी इनमें समा गए और किसी का स्वरूप अलग न रहा। परम्परा में सम्प्रदाय ऐसे ही समाते गए और यह सब अपने आप ऐसे हुआ जैसे सागर में धाराएँ समा जाती हैं। अनेक जातियों समुदायों के मिलने पर भी यह संस्कृति मैली नहीं हुई, बल्कि निरन्तर आत्मशोधन की सजगता से साफ होती रही है।''

हमारी संस्कृति आधुनिकता के पीछे भागने वाली नहीं हैं। यहाँ का मनुश्य आधुनिक होते हुए भी अपनी परम्पराओं को पीछे छोड़ने वाला नहीं है। अपनी परम्पराओं में लेकिन शोधन करता हुआ उसने रूढ़ियों को अवश्य पीछे छोड़ दिया है। भवानी भाई का हमारी संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण भी कुछ इसी प्रकार का है–

''यह आधुनिकता के पीछे भागने वाली संस्कृति नहीं है। मानव में मानवीयता के परिष्कार–संस्कार की संस्कृति है। यदि ऐसा न होता तो यहाँ वेदों की पीठ पर बौद्ध धर्म और जैन धर्म की संस्कृतियाँ पैदा ही नहीं हो सकती थीं।''

भवानी भाई का मानना है कि ''हमारी संस्कृति तो बुद्ध–महावीर, कबीर, नानक, नामदेव गाँधी की संस्कृति है–जो तप, त्याग, सत्य, करूणा, सहानुभूति एवं प्रेम पर केन्द्रित है। मानव से पशुता को घटाकर मानवीयता के विकास की संस्कृति है। यह एक अखण्ड धारा है–जिसे वैदिक–संस्कृति, बौद्ध संस्कृति, जैन संस्कृति, पौराणिक संस्कृति, जैसे ऐतिहासिक खंड़ों में विभक्त करके देखना भी अनुचित है। क्योंकि बौद्धों के बहुत से विचार तत्व पौराणिक, तन्त्र–मन्त्र, नाथ–सिद्ध संस्कृति में समाहित रहे हैं और उन्हें कैसे अलग करेंगे। इसमें 'बूँद समानी समुद्र में वाली बात है।''

हमारा दर्शन प्रेम और करूणा की बात करता है। वह पाश्चात्य देशों के विकास के दर्शन से अलग है। भवानी भाई कहते हैं–

''हत्या–हत्या के इस युग में एक ही जगह एक–दूसरे से एकदम विपरीत तीन–चार तरह के जीवन–दर्शन देखे जा सकते हैं। एक दर्शन प्रेम–करूणा की बात करता है–जिसका आधार हिन्दू,बौद्ध, ईसाई इस्लाम पर टिका है। दूसरा विकास का दर्शन है इसका जो व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के साथ साधन सम्पन्नता पर हैं।

हमारी संस्कृति में अर्पण और उत्सर्ग का भाव हजारों वर्षों से समाया हुआ है और इसी भाव को लेकर माखनलाल चतुर्वेदी जी की एक कविता 'मुझे तोड़ लेना वन माली' वाली पंक्ति ने भवानी भाई को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने कमल का फूल' कविता लिख डाली।

2. आधुनिकता विशयक दृष्टिकोण– भवानी भाई जहाँ एक ओर परम्परा को लेकर चलने वाले कवि हैं वहीं उन्होंने परम्परा के प्रति विद्रोह का स्वर भी उठाया। सबसे पहले तो आधुनिकता हम उनकी कविता में पाते हैं। जिस समय भवानी भाई कविताएँ लिख रहे थे उस समय छायावादी काव्य अपने चरम पर था। भवानी भाई को उसकी रहस्यवादी प्रकृति, दमा पीड़ित शब्दजाल और चमत्कार पसन्द नहीं आया और उन्होंने वस्तु और रूप के स्तर पर खुलापन लिए हुए कविता का समर्थन किया। उन्होंने पाश्चात्य कवि वर्डस्वर्थ, शैली, कीट्स को खूब पढ़ा। वह अपने देश के कवियों के ही नहीं बल्कि अंग्रेजी कवियों के भी कायल रहे। कहीं न कहीं वह चाहे परम्परा हो चाहे आधुनिकता दोनों में से ग्रहण करने वाली वस्तु को अपनाना चाहते हैं जिससे हमारा सम्पूर्ण विकास हो सके। परम्परा के प्रति लगाव का यह कतई मायने नहीं है कि वह आधुनिकता या आधुनिक के प्रति रूढ़िवादी विचार रखते हों।

भवानी भाई का मानना है कि मनुष्य दिन दूना रात चौगुना विकास कर रहा है। विज्ञान ने मनुष्य को हर प्रकार का सुख, समृद्धि और आराम दिया है। किन्तु उन्हें डर है कि इन भोग विलास की वस्तुओं के पीछे कहीं मानव संत्रास और कुंठा से न भर जाए। वह आधुनिकता को अपनाने की अंधी दौड़ से घबराते हैं। वह कविता में भी

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

पाष्चात्य से मिली बासी आधुनिकता, संत्रास, कुंठा–पराजय–बोध को जहर के समान मानते हैं। भवानी भाई का दुःखी मन अनायास ही कह उठता है कि–

''इधर पश्चिम ने आदर्श बनकर हमें भौतिकता के पीछे ऐसा भगाया कि हम कहीं के न रहे। न तो माया ही मिली न राम। मिली एक बासी आधुनिकता, सत्रास–कुण्ठा–पराजय–बोध की भावना। अस्तित्ववाद की फिलॉसफी। जिसने हमारी काल परम्परा में जहर घोल दिया है।''

वह भारतीयता से समर्थित स्वस्थ आधुनिकता के पक्षधर हैं। भवानी भाई का मानना है कि हमें आधुनिकताा का प्रयोग बिना सोचे समझे एक नकलमात्र करने के लिए नहीं करना चाहिए बल्कि हमें इसकी सहायता से एक नए भारत का निर्माण करना चाहिए। वह भारत के नव निर्माण का स्वप्न देखते हैं। वह चाहते हैं कि उद्योग धंधे बढें लेकिन ग्रामीणों को भी विकास का अवसर मिले। गाँव और शहर मिलकर ही एक नए भारत का निर्माण कर सकते हैं। वह कहते हैं –

''हमारी आज की शालाएँ भी अपने आस–पास के गाँवों से सहयोग करें, धान्य उत्पन्न करें, पशु पालें, सूत कातें, कपड़े बुनें। वे अपनी सारी आवश्यकताएँ विज्ञान की सहायता से श्रेष्ठतम उपायों और उपकरणों से पूरी करें उनका अस्तित्व ही सहकारिता पर अवलंबित उद्योगों के सहारे हो, इससे शिक्षक और विद्यार्थी तथा आसपास के लोग आवश्यकता और स्नेह के बंधन में बँधकर आनंद और मुक्तिलाभ करेंगे।''

कवि चाहता है कि एक रूढ़ियों के बन्धन से घिरा जीवन न जीकर हम उन्मुक्त होकर जियें। जो कि हमारी आज की पीढ़ी की सोच है। विचारों पर प्रतिबन्ध या जीवन शैली में किसी प्रकार की पुरातनता या रूढिबद्ध जीवन वह स्वीकार नहीं करता। भवानी भाई भी इससे सहमत दिखते हैं। वह जड़ता से मुक्ता की ओर जाने की बात करते हैं। वह भारतीय दर्शन में भी आधुनिकता को ढूँढ निकालते हैं।

हमारे भारतीय साहित्य और दर्शन में–विशेश–कर आगामों के अनुसार फूल आकाशतत्व है।कहीं न कहीं फूल चढ़ाकर हम आराध्य को ही ऊँचा नहीं मानते– स्वयं भी ऊँचा उठने की स्थिति में आ जाते हैं–जड़ता का भार कम हो जाता है– पूजा के भार में हल्कापन होता है वह जड़ता से मुक्तता का भाव है।'' और यही विचार भवानी भाई के भी है।

मिश्र जी आज की आधुनिकता को देखकर जहाँ एक नए सवेरे, नए विचारों की क्रान्ति की अगुवाई करने को तैयार दिखते हैं वहीं वह विज्ञान को विनाश का कारण भी मान रहे हैं। इस आधुनिकता और विकास की अंधी दौड़ में हम और कितना प्रकृति का दोहन और शोशण करेंगे यह शोचनीय है। गंदी होती नदियाँ और उन्मुक्त भाव से बहने वाली नदियों को बँधा देख वह बड़ा दुःखी हो जाते हैं और न चाहकर भी उनकी झुँझलाहट कुछ इस प्रकार फूट पड़ती है कि ''देखिए कितना बुरा समय आ गया है कि आज नदियों पर ही सबसे अधिक आक्रमण किया जा रहा है। उनका खून निचोड़ा जा रहा है – उन्हें गंदला किया जा रहा है। नदियाँ गंदली हो रही हैं तो संस्कृति गंदली हो रही है– इस बात पर सोचने की आज गम्भीर आवश्यकता है– पर इस बात को इस ढंग से सोचने के लिए विज्ञान के अन्धे लोग पता नहीं कब तैयार होंगे। होंगे भी या नहीं। नदियों पर इस अत्याचार से मैं तो बड़ा चिन्तित हूँ।''

आज का मानव हर काम अपनी इन्द्रियों की सन्तुष्टि के लिए करने लगा है। वह सुविधाभोगी हो गया है। इस इन्द्रिय–प्रधान विचारधारा का परिणाम बड़ा घातक होगा जो कि मानव को विनाष की ओर लो जाएगा। भवानीभाई भी इस घातक परिणाम को देख सकते थे। वह कहते हैं –

"16 वीं शताब्दी के बाद यूरोप में यह धारणा जोर पकड़ने लगी कि मानव–अस्तित्व इन्द्रियानुभव से परे नहीं है। इसी अवधारणा से इन्द्रिय–मूल्य–प्रधान होते गए और इन्द्रिय से अतीत मूल्य क्षीण–क्षीणतर। सभी सुविधाओं को पाने और भोगने की दौड़ इसी इन्द्रिय–प्रधान–मूल्य की देन है। इस प्रकार संस्कृति का प्रधान स्वर पारलौकिक, धार्मिक, नैतिक और लोकमंगलकारी न होकर लौकिक, धर्म–निरपेक्ष और स्वार्थपरक होता गया है और यही भोगवाद की भूख में विनाश का कारण भी है"।

मिश्र जी चाहते हैं कि हम ऊँच–नीच का भाव मिटाकर एक ऐसे समाज की स्थापना करें जो एकजुट होकर विकास के पथ पर अग्रसर हों। इसी विचार को लेकर चलने वाले गाँधी जी के वह आत्मा से अनुयायी रहे हैं। वह इसी वर्ग–भेद को लेकर कहते हैं – ''गाँधी राजनीतिक नहीं हैं, सन्त और समाज–सुधारक हैं उनकी विचारधारा में सन्त बोल रहा है। गाँधी ने विवेक से समझाया था कि हिन्दू–वर्ण व्यवस्था दो कौड़ी की है। हम अपने ही हाथों अपना गला काट बैठे हैं। अपने कुछ भाइयों को हमने शूद्र या अछूत कहकर दूर फेंक दिया है। जबकि सबसे ज्यादा मेहनती यही लोग है– ''यही सच्चे कर्मवीर हैं।''

उनका मानना है– ''गाँधी विचार–धारा (दर्शन) सभी प्रकार की बन्द खिड़कियाँ खोल कर मानव की मुक्ति का दर्शन है। मानव गरिमा की, मानव शक्ति की पहचान का दर्शन है।'' वह यह भी कहते हैं–''गाँधी का चिन्तन एक सम्प्रदाय का चिन्तन नहीं है–''एक अखण्ड विचारधारा से जुड़ा बढ़ा

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

सांस्कृतिक विकास का प्रवाहमान चिन्तन है।''

आज के बिकते हुए कवि को देखकर वह बहुत क्षुब्ध है। वह चाहते हैं कि रचनाकार आज भी अपना दायित्व समझे। कवि के मन में कितनी तिलमिलाहट है यह उनके इन शब्दों से ही स्पश्ट हो रहा है– ''आज हर जगह शब्द पर हमला है– आकाश के नीचे खाइयाँ खुद गई हैं– आदमी के पैरों के नीचे मुलायम जमीन गायब हो रही है। शब्द जिसका गुण है– व्याप्ति, ब्रहम, आकाश– वह घुट रहा है। ऐसा लगता है कि आकाश टूट कर गिर जाएगा चाँद, सितारों के साथ आदमी की खोपड़ी पर । केवल वज्रगर्भी जेट रह जाएगें। रचनाकार का अभी भी दायित्व है कि वह शब्द और उसमें निहित मूल्यों– अर्थों की प्रासंगिकता के लिए लड़ाई लड़े।''

3. आधुनिकता और परम्परा विशयक समग्र दृष्टि – भवानी भाई की गिनती उन श्रेश्ठ कवियों में की जाती है जो किसी बहाव में नहीं बहते बल्कि धारा की दिशा को बदलने में समक्ष हो जाते हैं। किसी भी दृष्ठिकोण या विचार के पीछे अंधी दौड में वे शामिल होना पसंद नही करते। हम भवानी भाई के लिए किसी वाद विशेश का प्रयोग करने से कतराते हैं क्योंकि यह वह कवि है जो फूल– पत्तियों से निकलकर साम्यवाद, अस्तित्ववाद, वैश्वीकरण, और बाजारीकरण तक पहुँच गया है। उनकी दृश्टि चारों तरफ पडती है। एक कोमल हदय कवि के साथ–साथ वह एक समाज का सजग प्रहरी भी है जो किसी भी अन्याय, अत्याचार का विरोध कराने को तत्पर है।

वह समाज के बदलते स्वरूप, संस्कृति और परम्परा के बदलते मायनों के साथ ही रूढियों की ढहती दीवारों को देख सकते हैं यहीं नहीं वह आधुनिकता की हवा के झोंके को भी महसूस कर रहे हैं जो हमें किसी नये संसार में बहाए लिए जा रहा है।

कवि का मन, कहीं भारतीय परम्परा को देखकर गदगद हो उठता है तो कहीं उन्हीं परम्पराओं को वह रूढ़ियाँ बनता देख क्षुब्ध हो जाता है। आधुनिकता के भी दोनों पहलुओं, विकास और विनाश को वह लेकर चला है। कहीं पर वह विज्ञान को विकास की धुरी मानता है तो कहीं इसी विज्ञान को मानव विनाश का उत्तरदायी भी ठहराता है। कवि आधुनिकता और परम्परा को एक तराजू के दो पल्लों की तरह मानता है जिनके अनुपात में बराबरी होने पर ही मानव विकास कर सकता है।

सहायक ग्रन्थ –

1. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य : डॉ० इन्द्रनाथ मदान।
2. अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य : डॉ० कुमार विमल।
3. आधुनिकता : साहित्य के संदर्भ में : डॉ० गंगाप्रसाद विमल।
4. आधुनिकता हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग : डॉ० गोपाल दत्त सारस्वत।
5. आधुनिकता के हाशिये में उर्वशी : डॉ० जयसिंह 'नीरद'।
6. परम्परा बन्धन नहीं : डॉ० विद्यानिवास मिश्र।
7. आधुनिकता और समकालीन रचना–संदर्भ : डॉ० नरेन्द्र मोहन।
8. आधुनिकता और आधुनिकीकरण : डॉ० रमेश कुन्तल मेघ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विजय बहादुर सिंह – भवानी प्रसाद मिश्र रचनावली – भूमिका से
2. विजय बहादुर सिंह – भावानी प्रसाद मिश्र रचनावली भूमिका से।
3. कृष्णदत्त पालीवाल अंतरंग साक्षात्कार पृ0 – 75
4. कृष्णदत्त पालीवाल अंतरंग साक्षात्कार पृ0 – 26
5. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 28
6. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 28
7. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 28
8. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 21
9. विजयबहादुर सिंह – भवानीप्रसाद मिश्र रचनावली – भूमिका से
10. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 15
11. कृष्णदत्त पालीवाल अंतरंग साक्षात्कार –पृ0 31
12. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 34
13. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 34
14. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 37
15. कृष्णदत्त पालीवाल अतरंग साक्षात्कार – पृ0 16

*****